



आर्योदय
एवं
यूथ मैगज़ीन
आर्य सभा मॉरीशस
२०१७



Aryodaye No. 377 cum Youth Magazine Vol. 13
September 2017

ARYA SABHA MAURITIUS & ARYA YUVAK SANGH

विषय-सूची



Contents

पृष्ठ/Page

प्रार्थना – ओ३म् उदीची दिक्.....	
<i>Dr O.N. Gangoo</i>	1
आचार्य जितेन्द्र पुरुषार्थी और दर्शनाचार्य श्री आशीष जी की मॉरीशस-यात्राएँ – <i>डॉ उ. ना. गंगू</i>	1-3
आकस्मिक मृत्यु – श्री ब. तानाकूर	4-5
धर्म के साधन – श्री एस. प्रीतम	5-6
जीवन – पं० रा. रामसाहा	7-8
नारी का उत्तरदायित्व – <i>श्रीमती श. मोहाबीर</i>	8-10
वेद मास यज्ञ की पूर्णाहुति - <i>पं० अ. छोटी</i>	11-12
श्रीमती अहिल्या बदालू इस दुनिया से विदा हो गई – <i>पंडिता वि. जहाल</i>	12-13
ओ३म् पवित्रेण पुनीहि मा शुकेण देव <i>पंडिता प्रे. तूफ़ानी</i>	13-14
Super Plants -- <i>B. Mokoonlyall</i>	15
Youth Magazine	
The Changing Landscape -- <i>Prof. S. Jugessur</i>	16-18
Love All, Hate None - <i>Mr D. Gangoo</i>	19
Teacher's Day : A Tribute to our Teachers - <i>Mr S. Nowlotha</i>	20
6th Anniversary of International Vegetarian Association - <i>Mr Y. Poteeram</i>	21-22
My first meditation camp experience - <i>S. Sumputh</i>	22-23
Faith needs no explanation - <i>V. Luchanah</i>	23-24
Where in the World -- <i>H. Routho</i>	24
What is success? -- <i>Mrs V.Oodun-Rajroop</i>	25-26
Family Values -- <i>Mrs T. Gopaul</i>	27
Les bienfaits de l'Exercice Physique - <i>Mr L. Rughooputh</i>	28
Blessings & Inspirations for the end-of-year examinations -- <i>Staff and Management</i>	29-30
Kenopanishad -- <i>Mr S. Peerthum</i>	30
Observations, Reasoning and Understanding -- <i>Mr D. Ramdharry</i>	31
Advice to the world -- <i>B. Mokoonlyall</i>	32
डी.ए.वी. कॉलेज मोरसेल्मा के चमकते सितारे – <i>श्रीमती आ. बुलोकी</i>	33

आर्योदय ARYODAYE

Arya Sabha Mauritius

1, Maharshi Dayanand St., Port Louis,

Tel : 212-2730, 208-7504,

Fax : 210-3778,

Email : aryamu@intnet.mu

www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादक - Chief Editor :

डॉ० उदय नारायण गंगू,

पी.एच.डी., ओ.एस.के.,

जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न

सह सम्पादक - Editor :

श्री सत्यदेव प्रीतम, बी.ए.,

ओ.एस.के., सी.एस.के., आर्य रत्न

सम्पादक मण्डल - Editorial Team :

(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,

पी.एच.डी., आर्य भूषण

(२) श्री बालचन्द तानाकूर, पी.एम.एस.एम,
आर्य रत्न

(३) श्री नरेन्द्र घूरा, पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण

(४) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर,

डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण

(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, दर्शनाचार्य

(६) लीलामणि करीमन, एम.ए., वाचस्पति

नोट - यह आवश्यक नहीं कि इस अंक में संगृहीत लेखों का दायित्व सम्पादक पर हो। लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.

मुख्य सम्पादक

प्रकाशक - आर्य सभा मॉरीशस

वार्षिक शुल्क - रु० २००/-

Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.

Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,

Tel : 208-1317, Fax : 212-9038



ओ३म् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो
रक्षिताऽशनिरिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥

अथर्व० ३/२७/४

भावार्थ – उत्तर दिशा में सोम – शान्त्यादि गुणों से आनन्द प्रदान करनेवाला जगदीश्वर सब जगत् का राजा है। वह अजन्मा और अच्छी प्रकार रक्षा करनेवाला है। विद्युत् उसके बाण हैं। जो अज्ञान से हमारा द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं उन सबकी बुराई को उन बाण-रूपी मुख के बीच में दग्ध कर देते हैं। (सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा)

Om Udīcī Dik Somo - Adhipatīh Swajo Rakshita Ashanirishavah. Tebhyo Namō - Adhipatibhyo Namō Rakshitribhyo Nama, Ishubhyo Nama Ebhyo Astu. Yo-Asman Dvēṣṭi Yam Vayam Dwishmashtam Vo Jambhe Dadhmah.

Meaning of words :- Udīcī - the north, Dik - direction, Somah - another name of God as the provider of peace, Adhipatīh - owner, Swajah - unborn, Rakshita - protector, Ashanīh - lightning, Ishavah - arrow.

Purport :- 'Soma', the provider of peace and bliss, reigns supreme in the North. We pay homage to this aspect of God for our own safety. He protects us like the arrow. This protection comes through forces of nature like lightning. Those who feel ill-will towards us or towards whom we feel hatred, we submit to His justice.

Explanation :- In the above mantra, Almighty God is addressed as 'Soma' – the provider of peace. We feel His presence in the north. However, He controls the forces of nature universally. It is thanks to them that we obtain the necessities of life, we bow again and again for His protection.

Dr O.N. Gangoo

**आचार्य जितेन्द्र पुरुषार्थी और दर्शनाचार्य
श्री आशीष जी की मॉरीशस-यात्राएँ**

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के., सी.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न

श्रीमद् दयानन्द वेदार्थ महाविद्यालय गुरुकुल, नई दिल्ली से इस वर्ष आचार्य जितेन्द्र पुरुषार्थी श्रावणी पर्व से पूर्व ही मॉरीशस पधारे। उन्होंने गुरुपूर्णिमा के अवसर पर आर्यसभा द्वारा आयोजित बहुकुण्डीय यज्ञ में भाग लिया और

यहाँ दो मास तक रहकर विविध धार्मिक कार्यक्रमों द्वारा श्रोताओं को संदेश दिये । यह उनकी इस देश में आठवीं यात्रा थी ।

उनकी पहली यात्रा सन् १९९८ में 'सत्यार्थप्रकाश आगमन शती समारोह' के अवसर पर हुआ था। दस साल बाद, २००८ में पुनः आर्यसभा के निमन्त्रण पर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के उपलक्ष्य में पधारे थे। इस दौरान वे लगभग तीन मास रहकर पूरे देश में वैदिक धर्म एवं योगासन व प्राणायाम का प्रचार करते रहे । अनेक स्थानों पर योगासन एवं प्राणायाम के शिविर लगाकर आर्यजनों को अच्छे स्वास्थ्य के महत्व का ज्ञान कराते रहे ।



दर्शनाचार्य श्री आशीष जी पहली बार २५ जुलाई सन् २०१० को मॉरीशस पधारे थे और १३ सितम्बर को भारत लौटे थे। दूसरी बार सन् २०११ में ५ अगस्त को आये थे और उन्होंने २४ सितम्बर को प्रस्थान किया था। उनकी तीसरी मॉरीशस-यात्रा हुई थी वर्ष २०१२ की २८ जुलाई को और वे वापिस हुए थे, उसी वर्ष के १२ सितम्बर को। ५ दिसम्बर सन् २०१३ में उनकी यहाँ चौथी यात्रा हुई थी। इस वर्ष उनका इस धरती पर 'श्रावणी मास' के दौरान २७ जुलाई को पदार्पण हुआ। यह उनकी पाँचवी यात्रा रही। इन सभी यात्राओं के दौरान उन्होंने विशेष रूप से युवा पीढ़ी के बीच शिविरों के माध्यम से प्रशिक्षण-कार्य को प्राथमिकता दी ।

५३ दिनों की अपनी पाँचवी यात्रा को पूर्ण सफल बनाने के लिए उन्होंने विविध कार्य किये, जैसे – स्कूल-कॉलिजों में छात्र-छात्राओं का मार्ग-दर्शन करना, युवा-प्रशिक्षण करना, ध्यान-शिविर का आयोजन करना, मंदिरों में महिलाओं को सम्बोधन करना, घर-घर जाकर परिवारों में सत्संग करना, शाखा-समाजों में प्रवचन करना, रेडियो-टेलीविजन पर भाषण देना, पंडित-पंडिताओं के मध्य-कार्यशालाओं का आयोजन करना, ध्यान-योग का शिक्षण करना, कात्रबोर्न की नगरपालिका में माता-पिताओं को जुटाकर सन्तानों के प्रति व्यवहार सम्बन्धी विचार-विमर्श करना, आदि। नगरपालिका में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे मॉरीशस गणतन्त्र के उपराष्ट्रपति श्री परमसिवम पिल्ले वायापुरी जी । श्रोतागण आचार्य जी की मधुर वाणी को मन्त्र-मुग्ध होकर श्रवण करते रहे और अपनी ज्ञान-पिपासु शान्त करते रहे ।

छः वर्ष पूर्व आचार्य आशीष जी ने 'International Vegetarian Association' की स्थापना की थी। पाई स्थित 'ऋषि दयानन्द संस्थान' में शनिवार १६ अगस्त को इस 'अन्तर्राष्ट्रीय शाकाहार संघ' ने विविध कार्यक्रमों के द्वारा अपनी स्थापना

की छठी वर्षगाँठ बड़ी भव्यता से मनाई । उसी अवसर पर आचार्य आशीष का विदाई-समारोह सम्पन्न हुआ। भारतीय उपउच्चायुक्त श्री अशोक कुमार जी उस मौके के विशेष अतिथि थे। विदाई-समारोह के दौरान आचार्य जी के प्रति विशेष आभार प्रकट किया गया। अधोलिखित पंक्तियों में दर्शनाचार्य आशीष जी का संक्षिप्त परिचय पठनीय है –



In 1991 he graduated as an Electronic Engineer from Amravati University, Maharashtra, India, but all the scientific knowledge could not quench his thirst for spiritual reality. He re-engineered his career towards the Vedic teachings within the Gurukul learning framework.

He qualified as 'Darshanāchārya' in the year 2001 from the Darshan Yog Mahāvidyālaya, Rojad, Gujarat, India where he studied various Arsha Granthas (the authentic Vedic scriptures) including the Yog Sutras of Patanjali, the philosophies of Sankhya, Vaisheshika, Nyāya Vedānta, etc. and Nirukta (Vedic Sanskrit grammar).

Learning in the original Sanskrit language served to better understand the real Vedic Meditation system and the divine Vedas. After Gurukul, he explored various other meditation systems and techniques including Neuro-linguistic-programming in modern psychology.

He has been conducting level-wise Residential Meditation Camps on Vedic Yog (not the physical yoga exercises) and Youth camps in Tapovan Ashram, Dehradun, India since 2010, and various non-residential learning camps, workshops and delivering interactive lectures as well for the past 15 years.

He conducted a 3-days residential camp in English in Mauritius in 2017 with very positive response. Āsthā TV Channel has recently telecasted his lecture series on: "मधुर संबंधों के स्वर्णिम सूत्र" (Golden keys to harmonize relationships) and "सफलता के स्वर्णिम सूत्र" (Golden keys for Success).

An enthusiastic intellectual, he possesses the capability to elucidate the paramount scientific, everlasting and irrefutable principles of Vedas in modern and logical way. In 2008-2009 he trained Gurukul graduates in English under the International Vedic Priest Program (www.vedprachārmission.org) to propagate the Vedic teachings and values in the Western world.

He has been regularly invited to U.S.A., Canada, Australia, Mauritius, South Africa, etc. several times to disseminate the Vedic wisdom and present research papers as a key note speaker in various International Conferences.

He is the founder of the IVA (International Vegetarian Association (www.ivaglobe.com)) in Mauritius, U.S.A., Canada, Australia and India.

He is currently delivering his services as Achārya at the Vedic Sadhan Āshram, Tapovan, Nalapani, Dehradun, India. Teaching Vedic Yog practices, he is also coordinating with the different activities of the Ashram.

जन्म और मृत्यु का सम्बन्ध अटूट होता है। संसार में जिसका जन्म होता है, उसकी मृत्यु निश्चित होती है। कब किसकी मौत हो जाए? यह कोई नहीं जान सकता है, क्योंकि मृत्यु छाया की तरह हमारे साथ रहती है।

संसार में मनुष्य की मौत कई कारणों से होती है। वृद्धावस्था में वृद्ध जनों का निधन स्वाभाविक रूप से होता है। कितने प्राणी रोगग्रस्त होकर शीघ्र ही मर जाते हैं, उनके व्यक्ति बाढ़, तूफ़ान, आंधी आदि प्राकृतिक प्रकोपों के चपेट में अपनी जानें गवाँ देते हैं। असंख्य जीव शत्रुओं के हत्याकाण्ड में नष्ट हो जाते हैं। अनगिनत प्राणी दुर्घटनाओं का शिकार हो जाते हैं और कई नासमझ इंसान तो आत्महत्या तक कर बैठते हैं।

हमारे देश में हत्याओं और दुर्घटनाओं से बहुत लोगों की आकस्मिक मृत्यु होती रहती है, जिनसे कितने परिवार पीड़ित हो रहे हैं। दुर्घटनाओं से ग्रसित परिवारों में वृद्ध माता-पिता असहाय हो रहे हैं, विधवाओं की संख्याएँ बढ़ रही हैं, संतानें अनाथ हो रही हैं। ऐसी गम्भीर परिस्थिति में सड़क-दुर्घटनाओं से बचना और हत्यारों से सुरक्षित रहना अति आवश्यक है।

मॉरीशस की आबादी साढ़े तेरह लाख की होने वाली है। फिर भी यहाँ नित्य हत्याएँ और भयानक दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। इनसे हम अति चिन्तित हैं। हमारी सरकार भी इन घटनाओं की रोक-थाम में पूरी कोशिश कर रही है।

हमारे इस छोटे से द्वीप में पाँच लाख से अधिक सवारी के साधन हैं, जिनमें मोटरें, वान, बसें, लोरियाँ, ट्रक्टर, मोटर-साइकिल, साइकिल, आदि हमारी सड़कों पर गुज़रती रहती है। इसके अलावा हज़ारों राहगीर नित्य सड़कों पर अपनी पद-यात्रा पूरी करते रहते हैं। इन कारणों से सड़क दुर्घटनाएँ होती रहती हैं।

गत जुलाई महीने में (Road Transport Road Traffic Accidents) के आँकड़े अनुसार सवारी के साधनों की वृद्धि के साथ ही सड़क दुर्घटनाओं में भी वृद्धि दिखाई दे रही है और घायलों तथा मृतकों की संख्याएँ भी बढ़ती जा रही है, जो हम मॉरीशसवासियों के लिए एक चिन्ताजनक मुद्दा बना हुआ है। (Statistics of Mauritius) के आधार पर गत वर्ष हमारे देश में सड़क हादसों में लगभग तीन हज़ार व्यक्ति घायल हुए थे और १५३ लोगों की अचानक मौत हो गई थी। इस वर्ष अगस्त महीने तक लगभग हज़ार व्यक्ति घायल हो चुके थे और १०५ व्यक्ति मारे गए थे। ऐसी गम्भीर स्थिति में हमें सड़क पर सावधान रहने की ज़रूरत है।

मानव जीवन हमें बड़े भाग्य से प्राप्त हुआ है। इस जीवन को सुरक्षित रखना हमारा परम कर्तव्य है। घर से बाहर कदम रखते ही हर एक पथिक को बड़ी सावधानीपूर्वक रास्ते का उपयोग करना चाहिए। गाड़ी चालकों को बड़ी सतर्कतापूर्वक अपनी गाड़ी चलानी चाहिए, Mobile Phone का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। सड़क की सांकेतिक चिह्नों पर पूरा ध्यान केन्द्रित करना चाहिए और सारी चिन्ताओं से मुक्त होकर अपना सफ़र तय करना चाहिए।

हम सभी देशवासी अगर सड़क का सही उपयोग करेंगे तथा सचेत होकर यात्रा करेंगे तो हमारी यात्रा मंगलमय होगी। इसी प्रकार अगर हम सभी नागरिक एक दूसरे के प्रेम और सहयोग से जीने की भावना लेकर यहाँ जीवन व्यतीत करेंगे तो आकस्मिक मृत्यु के शिकार से बचे रहेंगे और हमारे परिवारों में अचानक दुख की कालिमा प्रकट नहीं होगी।

पाठको ! मृत्यु अवश्यंभावी है, परन्तु हमें अपने प्राणों की रक्षा करती रहनी चाहिए ताकि बेमौत की मौत न हो जाए। परमात्मा सभी को शत्रुओं और जान लेवा दुर्घटनाओं से बचाए !

धर्म के साधन

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न,
महामन्त्री आर्य सभा

धर्म साध्य है, जिस तक पहुँचने के लिए साधक को साधन की आवश्यकता होती है। हमने आर्योदय के अंक नं० ३७४ में तीन साधनों का उल्लेख किया था— १ यज्ञ, २. अध्ययन और ३. दान।

आज के लेख में साधन के रूप में स्तुति, प्रार्थना और उपासना पर प्रकाश डालेंगे और अन्त में कर्म का उल्लेख करेंगे।

बहुत से लोग धर्म के इन साधनों को ही धर्म समझते हैं या धर्म समझने लगते हैं। यह सत्य नहीं है। धर्म तो धारण करने का साधन है, जैसे – गन्तव्य तक पहुँचने के लिए सवारी साधन है। साधन गन्तव्य नहीं है। धर्म तो जीने के लिए है। जैसे – मनु महाराज द्वारा गिनाये गये धर्म के दस लक्षणों में से 'धृति' धीरज को लेते हैं। जीवन में धैर्य धारण करना चाहिए। जब विकट समय जीवन में आ पड़े तो धैर्य से काम लेना चाहिए। घबड़ाना नहीं चाहिए। हाथ मोड़कर बैठ जाना नहीं चाहिए। इसको कहते हैं धर्म के लक्षण को कार्य में परिणत करना।

स्वामी दयानन्द ने यत्र-तत्र 'स्तुति' की व्याख्या विशद रूप से की है। अलग से स्तुति, प्रार्थना और उपासना के आठ मंत्र दिये हैं, जिनमें सात यजुर्वेद से उद्धृत किये हैं। केवल एक मंत्र ऋ० १०/१२३/१० से है जो इस प्रकार है -

**‘प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।’**

उक्त मंत्र एक प्रार्थना है। परमात्मा से साधक माँगकर रहा है। सुनिए स्वामी दयानन्द के शब्दों में, ‘जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होके हम लोग भक्ति करें। आपका आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, उसकी कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें।’

उन आठ मंत्रों में स्तुति के मंत्र भी हैं। उनमें माँग याने प्रार्थना बिलकुल नहीं। जैसे – ‘**हिरण्यगर्भ समवर्त्तताग्रे.....’** और ‘**य आत्मदा बलदा यस्य विश्व.....’** इनमें केवल परमात्मा के गुणों का गान है।

किसी-किसी मंत्र में तीनों हैं – स्तुति भी है, प्रार्थना भी है और उपासना भी है।

आराधक पहले स्तुति करता है फिर उपासना करता है और अन्त में धीरे से जो माँगना है, माँग लेता है।

स्तुति भगवान् की चापलुसी नहीं है। स्तुति से भगवान् को कुछ मिलता नहीं उल्टे स्तुतिकर्ता को ही फायदा होता है। गुणों का गान करते-करते भगवान् के कुछ गुण हममें आने लगते हैं। जैसे अग्नि के पास बैठने से बैठने वाले में गरमी आने लगती है।

हम सही ढंग से प्रार्थना भी करना नहीं जानते । मंत्र में है – **दुरितानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आसुव ।**

अर्थ – ‘आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुखों को दूर कीजिए।’

जब तक हम नहीं जानेंगे हममें क्या दुर्गुण हैं, क्या दुर्व्यसन और क्या दुख है, कितने प्रकार के दुख हैं।

ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करने का मतलब यह बिलकुल नहीं कि हमें निठल्ले बैठे रहे, ईश्वर हमारे काम कर देगा। यही भी मतलब नहीं कि हम गलत करें और परमात्मा सब ठीक कर दें। परमात्मा ने हमें नैसर्गिक बुद्धि दी है और ऊपर से वेद-ज्ञान दिया है कि हम जीने के लिए पूरा पुरुषार्थ करें फिर माँगें, तब भगवान् देता है। भगवान् यदि हमारी गलतियों को माफ़ कर देता तो पाप बढ़ता जाएगा। इसीलिए हमने गाना बन्द कर दिया, **‘क्षमा करो अपराध सब, कर दो भव से पार ।’**

जो ‘कर्म’ करता है, उसी को भगवान् सहायता करता है। अंग्रेज़ी में कहा भी गया है – ‘God helps those who help themselves’, **‘हिम्मते मर्दे मदते खूदा’** – हमें भूलना नहीं चाहिए हम कर्म योनि में आये हैं।

जीवन | पंडित राजमन रामसाहा, आर्य भूषण

हर किसी का जीवन उसके जन्म से प्रारम्भ होता है। पालने-पोसने वालों के प्रेम से संस्कार पाकर लोग अपने पैरों पर खड़े होते हैं। पालने-पोसने वालों को चाहिए कि यथासम्भव बच्चे को भले और बुरे का अन्तर जानने के लायक तीन वर्ष की आयु से बनाने लगे। पाँच वर्ष तक आते-आते बच्चे में इतनी समझ आ जानी चाहिए कि ऐसी जगह में चलने, खेलने, दौड़ने आदि से घाव लग सकता है और ऐसी जगह पर चलने से मेरी हानि नहीं। बच्चा खेलते समय गिरने पर अपने को सम्भालने योग्य बनने लगे।

ऐसी बातों को प्रेम के साथ-साथ थोड़े से अधिकार से सिखाना चाहिए। यदि बच्चा अपनी आयु के आरम्भ में अपनी हानि से बचने का स्वभाव बना लेगा, तब वह अपने आप अच्छाई बटोरने में मन लगाने लगेगा। पालने-पोसने वाले को बाल मनोविज्ञान का ज्ञान होना अनिवार्य है।

बच्चे को ज्ञान देने के लिए सही व्यक्ति की निगरानी में घुमाने ले जाना चाहिए। बच्चे के अन्दर ज्ञान पाने की इच्छाएँ तो शक्ति और आयु के अनुसार जगाए रखनी चाहिए, पर मन-पसन्द वस्तुओं की खरीदारी करवाने की इच्छाओं से दूर रखना चाहिए। वह पालने-पोसने वाले के न्याय से जो प्राप्त करले उसी पर सन्तुष्ट होने के स्वभाव वाला बने। जीवन में खेलने, कुछ सीखने परिवार के साथ रहने-घूमने-जाने का दिनचर्या छोटेपन से रखना चाहिए। समय-सारिणी से बच्चा जीवन को समझ जाएगा कि मनुष्य वहीं होता है, जो समय के अनुसार जीता है, जो जिस घर में जन्मा है, उस घर के समय के अनुसार जीने वाला हो नहीं तो वह एक प्रकार का पशु है। बच्चों को पालने-पोसने वाले चाहे सभी समान लगते हैं, पर सबकी मासिक आय बराबर नहीं होती है। सभी की शिक्षा और समझ बराबर नहीं होती। हर किसी को अपनी स्थिति के अनुकूल आय पाने और खर्च करने की कला सीखनी पड़ती है। जो इस कला को नहीं जानते, उनके हाथ धन के आते ही खर्चकर जाने की लत आ जाती है।

ऐसे लोग बड़ी चिन्ता में जीवन बिताते हैं। ऐसे ही लोगों से घर में कोई सुख से जी नहीं पाता है। खर्च करने की कला न जानने से चिन्ता में डूबकर आए धन को स्वयं शराब पीने और जुए खेलने में गँवाने लगते हैं। दिखावे का जीवन घर की देवियाँ दिखाने में लग जाती हैं। यही कारण है कि घर में एक मुखिया चाहिए। उसी के निर्णय से जीने पर घर के सब लोगों का जीवन बनता जाता है। खर्च ही के बल पर लोग दूसरे से अधिक सम्भलकर

जीने वाले हो जाते हैं। अपने को बढ़कर बताना नहीं होता है। पर अपने हाथ को किसी दिन के लिए खाली नहीं रखना होता है। बताने वालों की बराबरी करने में आय को व्यय के चूल्हे में झोंक देने की आदत नहीं बनानी चाहिए।

बच्चे इतना तो जान जाते हैं कि बिना आय के जीवन में कुछ भी हो पाना सम्भव नहीं है। उनको चाहिए कि बीमारी लगने नहीं देना चाहिए। आवश्यकताओं को तो जुटाना ही होता है, यही गृहस्थ-धर्म है। जो खर्च करने की कला सीख पाते हैं। वे अपने घर के अनुकूल जिससे कोई भूखा न रहे, जुटा देते हैं। अपनी आमदनी को टटोलते रहते हैं। इसी कारण वे गरीब कहलाते हैं। चाहे बच्चों को पढ़ना और आगे बढ़ना होता है, पर घरेलू धन की स्थिति का ज्ञान उन्हें भी होना चाहिए। यही खर्च आज के समाज में कमाऊ पति-पत्नी के घर में हंगामे के कारण है, डायवोस है, बच्चे हाथ से बेहाथ हैं, चरित्र-शून्य हैं।

खर्च करने की कला में कोई बड़ी बात नहीं होती है। व्यक्ति एक मर्यादा में आवश्यक वस्तुओं पर खर्च करता है। उसका घर चाहिए कि वह दिखावे से दूर हो, इसी संस्कार से अधिक गरीब मॉरीशस सुधर सके। कितने गरीब परिवार इस कारण शाकाहारी भी बन जाते हैं, कम खर्ची वाले बनकर जीवन बिताना चाहिए। यह जीने का एक तरीका है।

इस तरह का जीवन घर के अन्दर सभी सदस्यों को एक मर्यादा में रहने का पाठ देता है। लोगों को दुर्व्यसनों से बचाए रखता है। ऐसे ही गरीब इसके आज सुखी जीने वाले बने हैं। यदि अभी भी अपनी पवित्रता और सादगी की आदत बनाए हुए हैं, तो हमेशा सुखी रहने वाले हैं।

हम आप आम जनता सभी काम करके जीने वाले गरीब ही होते हैं। मास के अन्त में तन्ख्वाह हाथ न लगे तब पता लगता है कि हम किस खेत के हैं। हम अपने जीने के ढंग से अपने जीवन को खिलौना बनाकर खेल रहे हैं। जीवन में जिम्मेदार होने की आवश्यकता है।

नारी का उत्तरदायित्व

श्रीमती शांति मोहावीर, एम.ए., पी.एच.डी.

यह जानकर अत्यंत ही प्रसन्नता हुई कि इस वर्ष नवंबर के महीने में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन होनेवाला है। सम्मेलन का मुख्य विषय 'नारी का उत्तरदायित्व' है। इस विषय ने मेरे हृदय को जितना गद्गद किया उतना

ही मेरे मनोमस्तिष्क को उद्वेलित भी किया ।

बहनो, आज के मॉरीशस में क्या हम स्त्रियाँ अपने उत्तरदायित्व भली-भाँति समझने में समर्थ हैं? हमारे देश की अधिकतर नारियाँ सुशिक्षित हैं। परन्तु क्या वे अपनी शिक्षा का प्रयोग समाज को सही दिशा देने में कर रही हैं ? 'उत्तरदायित्व' मात्र शब्द नहीं है। इसका अर्थ गहन है। जिसने भी इस शब्द के अर्थ को आत्मसात् कर लिया, उसका निजी जीवन ही नहीं अपितु उसके परिवार, आस-पड़ोस और समाज का जीवन भी सफल हो गया। अनायास ही मुझे स्मरण हो आयीं छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की पंक्तियाँ:- 'मुक्त करो नारी को मानव, चिर बंदिनी नारी को' ।

आधुनिक महिलाएँ पुरुषों की दया की मोहताज नहीं रहीं। यदि नारी की स्वतंत्रता में आज पुरुष बाधा बनता है, तो उसे उसकी गलती का एहसास शीघ्र ही दिला दिया जाता है। जिस पुरुष को अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारनी होती है, वही नारी पर अत्याचार करने का दुस्साहस कर सकता है। रही बात उन नारियों की जो चुप्पी साधे अन्याय का वरण करती हैं, तो उन्हें कौन समझाए। न चाहते हुए भी पुरुष ने नारी को कब का आज्ञाद कर दिया है। परन्तु क्या अज्ञान, अंधविश्वास, निंदा-चुगली, आलस्य-प्रमाद, छल-कपट जैसी कुटिलताओं से नारी अपने आपको मुक्त कर पाई है ?

आज की नारी हर प्रकार के दुर्व्यसन को अपने जीवन का अटूट हिस्सा बना चुकी है। स्त्री शराब पी रही है, बड़ी शान से सिगरेट फूँक रही है, एक हाथ में बड़ी-बड़ी डिग्रियों से सुशोभित है तो दूसरी तरफ अंधविश्वास का ताज पहनकर इठला रही है। स्वतंत्रता और आधुनिकता का गलत अर्थ अपनाकर हम अपने उत्तरदायित्वों से कब तक भागेंगी? क्या अपनी मुक्ति का हनन करके हम परिवार, समाज, जाति और देश को उन्नत कर पायेंगी ?

स्मरण रहे, नारी पूजनीय है। उसे पुरुषों से ही नहीं, अपितु किसी से भी अधिकार माँगने की आवश्यकता नहीं है। नारी-पुरुष में कोई समानता है ही नहीं। वह तो सबसे ऊपर है, श्रेष्ठ है देखिए 'आर्यवीर' (२५ अक्तूबर १९२९) में प्रकाशित इस लेख की पंक्तियाँ क्या कहती हैं।

*ईश्वर ने भी स्त्री-पुरुषों को समान
स्वभाव व प्रकृति का नहीं बनाया,
माताओं के अधिकार पुरुषों से भी
अधिक है, अतः स्त्रियों को पुरुषों
की भाँति शिक्षा देना प्राकृतिक नियमों के प्रतिकूल है ।'*

मनुस्मृति ने तो स्पष्ट कह दिया है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहीं पर देवताओं का वास होता है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रन्ते तत्र देवता' – परन्तु जब स्वयं देवताओं को दुत्कार कर शराब, सिगरेट अश्लील फिल्में, तामसिक भोजन, मादक-द्रव्य आदि राक्षसों को नारी अपने घर में शरण दे रही है तब उसके घर को कौन बचाए ? चोर-डाकुओं के हाथ में अपने घर की चाभी दे देना मूर्खता नहीं तो और क्या है ? आज घर-परिवार में संध्या-हवन हो न हो परन्तु हर सप्ताह जुआ खेलने के लिए गली के नुक्कड़ों में हमारी बहनें लाइनों में खड़ी मिलती हैं। अच्छे गुणवाले शाकाहारी पुरुषों को मांसाहारी बनाकर अपनी श्रेष्ठता का प्रमाण देती है।

स्मरण रहे, स्त्री हर कदम पर श्रेष्ठ गुरु है। वह अपनी संतानों के संस्कार के साथ-साथ अपने पति के अवगुणों को दूर कर उसके गुणों को उभारने में सहायक होती है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने नारी को पति की मंत्री कहा है – 'गृहिणी तथा मंत्री स्वपति की शिक्षिता हैं वे सती है।' समाज को सावधान करते हुए और स्त्रियों को उनका दायित्व दिलाते हुए 'आर्यवीर' (२५ अक्तूबर १९२९) की पंक्तियाँ कहती हैं : 'स्त्री को सेवा-समय में सेवक, विपत्ति समय में मित्र और गृह प्रबंध में मंत्री कहा गया है। सेवक, मित्र और मंत्री मूर्ख हो तो कितना कष्ट होगा?' रास्ता भटके हुए नवजवानों को सही मार्ग दिखाने में आज कितनी माताएँ सक्षम हैं ? भ्रमों से, व्यसनों से दूर कर अपनी संतानों को आदर्श नागरिक बनाना हर माता का परम कर्तव्य है। परन्तु अंधविश्वास के असंख्य बीज अपनी संतानों के मनोमस्तिष्क में बोकर अनुशासन को गलत बताकर, धार्मिकता को मानव की कमज़ोरी बताकर और मानवता का गला घोटना सिखाकर आज हम अपनी संतानों के चरित्र को मलीन बना रही हैं। यदि हम स्त्रियाँ अपने उत्तरदायित्वों से नज़रें मिलाकर उन्हें भली-भाँति सम्पन्न करने का प्रण ले लें तो सुनहरे भविष्य का स्वप्न अवश्य साकार होगा।

स्मरण रहे, नारी करुणा है, सहनशीलता है, निर्माता है, न्याय है, जननी है, शक्ति है, प्रेम है, श्रद्धा है और स्वर्ग है।

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' (जयशंकर प्रसाद)

'यदि स्वर्ग कहीं है पृथ्वी पर
तो वह नारी के उर के भीतर।' (पंत)

वेद मास यज्ञ की पूर्णाहुति



नुवेल देकुर्वेत आर्यसमाज और महिला समाज ने आर्य सभा मॉरीशस के तत्वावधान में एवं मोका आर्य परिषद् के सहयोग से वेद-मास के संदर्भ में एक त्रिदिवसीय महायज्ञ का आयोजन किया।

तीन दिनों का यह कार्यक्रम इस प्रकार रहा - शुक्रवार ०८

सितम्बर को सायंकाल २.४५ बजे से ५.३० बजे तक, शनिवार ०९ सितम्बर को प्रातःकाल ८.४५ बजे से १०.३० बजे तक एवं सायंकाल २.४५ बजे से ५.३० बजे तक और रविवार १० सितम्बर को ८.३० बजे से १२.०० बजे तक यज्ञ, भजन एवं प्रवचन निर्विघ्नतापूर्वक सम्पन्न हुए।

पंडित वेदव्रत सालिक जी, पंडित सत्यानन्द फेकू जी, पंडिता अनीता छोटी जी, पंडिता विश्वानि हेमराज जी एवं मोका ज़िले से आये हुए अन्य पुरोहित-पुरोहिताओं ने सफलातपूर्वक यज्ञ सम्पन्न किया।

आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू जी, उपप्रधान एवं वेद-प्रचार समिति के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी, मोका आर्य ज़िला परिषद् के मान्यप्रधान श्री नरेन्द्र घूरा जी एवं आस-पास और दूर-दूर से आये हुए बहुत-से वेद प्रेमियों को देहरादून के तपोवन आश्रम से पधारे दर्शनाचार्य आशीष जी के प्रेरणादायक प्रवचनों ने ज्ञान प्रदान करके आनन्दित किया। आचार्य जी को सुनने के लिए भारी संख्या में धर्म-प्रेमी नर-नारियों एवं बाल-वृद्धों ने अपनी उपस्थिति दी।

शुक्रवार को आचार्य जी ने ब्रह्मयज्ञ, अग्निहोत्र एवं पितृ-यज्ञ पर प्रवचन देते हुए यज्ञ कर्म को नियमितरूप से सम्पन्न करने पर बल दिया। पितृ-यज्ञ के अन्तर्गत उन्होंने बताया कि जीवित माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। मृत

पूर्वजों का श्राद्ध-तर्पण करना अन्धविश्वास है। जीवित माता-पिता, दादा-दादी और बड़े जनों के लिए भोजन की व्यवस्था करना, चिकित्सा एवं सुख-सुविधा का प्रबन्ध करना ही श्राद्ध कहलाता है। तर्पण-क्रिया से माता-पिता को तृप्त करते हैं। जब बच्चे सत्य मार्ग पर चलते हैं, तभी माता-पिता तृप्त होते हैं।

दूसरे दिन के प्रवचन में आचार्य ने युवा-पीढ़ी को सम्बोधित किया और वर्तमान 'टेक्नॉलिजी' पर प्रकाश डाला और बताया कि टेक्नॉलिजी का सही प्रयोग होना चाहिए। यह देखा जाता है कि युवक मोबाइल आदि का दुरुपयोग करते हैं।

तीसरे दिन, पूर्णाहुति के पश्चात् उन्होंने युवकों में नेतृत्व कला की आवश्यकता पर बल देते हुए बताया कि युवा-पीढ़ी ही भविष्य का निर्माण करती है, इसलिए उन्हें उत्तम शिक्षा से विभूषित करना सब का परम धर्म है। शान्ति-पाठ के पश्चात् सभी ने प्रीतिभोज में भाग लिया और प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने घर के लिए प्रस्थान किया।

पंडिता अनीता छोटी

श्रीमती अहिल्या बदालू इस दुनिया से विदा हो गईं

*पानी उसकी, भूमि उसीकी, सब कुछ उसी महान् का ।
ना ये तेरा ना ये मेरा, मन्दिर है भगवान् का ।*

श्रीमती अहिल्या बदालू का जन्म ९ मार्च १९२० को पोर्टलुई में हुआ था। माता का नाम श्रीमती मनबसिया गुमानी और पिता का नाम श्रीमान् शिवनारायण बहादूर था, जो बोन तेर, वाक्वा के रहने वाले थे।

अहिल्या जी का विवाह श्रीमान् रामकिसुन कन्हाय बदालू के साथ ३० नवम्बर १९४० को पं० बलराम आपादू द्वारा वैदिक रीति से सुसम्पन्न हुआ था। वैवाहिक जीवनकाल में उनकी तीन संतानें हुईं। दो पुत्रियाँ – विद्याधरी और प्रेमिला तथा एक पुत्र यशवन्त बदालू। श्रीमती अहिल्या बदालू ने माहेवर्ग के (ले सेर स्कूल) में चौथी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की थी।

एक समय पोर्टलुई आर्यसभा के समीप रूत-शातो-दो रहते थे, क्योंकि पति बड़ई का काम करता था। दोनों पति-पत्नी वहाँ के समाज के कर्मठ सदस्य थे। बाद में मोरसेल्माँ-सें-आन्द्रे आये और आर्य महिला समाज, शाखा नं० १३६ के प्रधाना बनीं, उसके बाद मान्य प्रधाना बनीं। जब तक स्वास्थ्य ने उनका साथ दिया, वे यज्ञ और सत्संग में भाग लेती रहीं। हर साल ऋषि बोध हो

या नवसम्बत्सर अथवा श्रावणी महोत्सव, प्रत्येक पर्व के लिए ५०० रुपये की राशि दान में देती थीं। उन्होंने यहाँ तक समाज के निर्माण-कार्य में एक बड़ी राशि द्वारा अपना योगदान दिया। कुछ महीने की बीमारी से शरीर एकदम कमज़ोर पड़ गया और सोमवार २२ मई २०१७ को घर ही पर उनका देहान्त हो गया। उन्होंने वर्ष २०१७ की पूरी मासिक चुका ली थी।

अंत्येष्टि के दिन उनकी अंतिम विदाई के लिए आर्यसभा के निम्न अधिकारीगण एवं गणमान्य उपस्थित थे – डॉ० रुद्रसेन नीरुर, श्री सत्यदेव प्रीतम, श्रीमती धनवन्ती रामचरण, डॉ० जयचन्द लालबिहारी, श्रीमती सती रामफल, श्रीमती प्रतिभा भोला, श्रीमती बुलोकी, श्री राज सोब्रन, पं० मानिकचन्द बुद्ध, पंडिता विद्वन्ती जहाल, पंडिता लक्ष्मण, पंडित सोहर, पंडिता कविता चमन, पंडिता पोखराज, पं० शिवशंकर रामखेलावन, पं० मुखराम, पं० सहदेव जीराखन, आचार्य चारुदत्त जी, आदि।

वे पीछे अपनी दो बेटियाँ, एक पुत्र और पुत्र-वधू तथा दो पते, बड़े पोते सपत्नी छोड़ गयीं। अपने सद्भाव के आधार पर आप सदैव सबके दिलों में जीवित रहेंगी।

पति की मृत्यु ११ अप्रैल २००२ को ९४ साल की आयु में हुई थी। पति के चले जाने के बाद उन्होंने बच्चों के साथ ही अपना बाक़ी जीवन गुज़ारा।

*इस जीवन की यही है कहानी,
आनी-जानी ये दुनिया जैसे दरिया का पानी,
हम सब खेल-खिलौने उसके, खेल रहा कर्तार रे।*

पंडिता विद्वन्ती जहाल

ओ३म् पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत् अग्ने क्रत्वा क्रतुँऽऽरनु

प्रेमिला तूफ़ानी, वाचस्पति

भावार्थ :- हे प्रकाशमान् विद्या देने हारे विद्वन् ! आप शुद्ध वीर्य पराक्रम से स्वयं पवित्र होकर मुझको इससे पवित्र करके अपनी बुद्धि व कर्म से अपनी प्रज्ञा व कर्म को पवित्र करके हमारी बुद्धि वा कर्मों को पुनः पुनः पवित्र किया करो।

प्रस्तुत मंत्र यजुर्वेद के उन्नीसवें अध्याय का चालीसवाँ मंत्र है। इसका

देवता 'अग्नि' है। अग्नि में प्रकाश है। विद्वान् अग्नि है, जो प्रकाश फैलाता है। परमात्मा भी प्रकाशस्वरूप है। उसी परमात्मा से मानव अपने जीवन में पवित्रता फैलाने की शक्ति की याचना करता है। वह कहता है कि हे परमात्मा ! मेरा जीवन सुन्दर बना दो। जीवन में सुन्दरता कैसे आती है ? जब मानव स्वयं समझ जाता है कि उसे मन, वचन और कर्म से सत्य का पालन करना चाहिए, तभी वह पवित्र और सुन्दर बन जाता है।

मंत्र में 'पवित्रेण' शब्द आया है। पवित्रता से सम्बन्ध रखने वाला यह शब्द कई अर्थों का बोध कराता है। परमात्मा ही पवित्रता का पुँज है। अग्नि स्वरूप परमात्मा मानव जीवन को अपनी पवित्रता से सोने की तरह चमका देता है। मनुष्य जब परम पवित्र परमात्मा को पहचान लेता है और उसकी भक्ति में लीन हो जाता है तब वह पवित्र हो जाता है। अग्नि स्वरूप परमात्मा उसकी आत्मा में आनन्द भर देता है।

फिर आगे मंत्र में 'शुक्रेण' शब्द आया है, जिसका अर्थ है श्वेत पदार्थ की भाँति पवित्र हो जाना, बेदाग हो जाना। झरने का पानी चट्टानों से टकराता हुआ, जब नीचे गिरता है तब उस पानी में सफ़ेदी आ जाती है, वह दृश्य बहुत सुहाना होता है। उसे देखने से आँखों को आराम मिलता है। इसी प्रकार जब हमारा जीवन शुद्ध हो जाता है, तब दूसरे लोग भी उस जीवन को देखकर आनन्द पाते हैं।

फिर मंत्र आगे कहता है 'दीद्यत्' अर्थात् हे परमेश्वर ! हमें प्रकाश के समान देदीप्यमान बनाओ, ताकि हम सूर्य के समान संसार का अन्धकार दूर कर सकें। दुख-दरिद्रता और दुर्गुण अन्धकार हैं। हमें विद्या के प्रकाश से इस अन्धकार को दूर करना है।

अन्तिम मंत्रांश में कहा गया - 'अग्ने क्रत्वा क्रतँ रनु' - हे प्रकाश-पुंज परमेश्वर ! अग्नि रूप यज्ञ के द्वारा हमारी बुद्धियों और कर्मों को प्रकाशित कर दीजिए। अग्नि के अनुकूल चलने से मानव संसारिक दुख-रूपी अन्धकार का सामना करने में समर्थ होता है। यह तभी सम्भव होता है, जब भक्त अग्नि स्वरूप परमेश्वर को जान लेता है।

निष्कर्षतः पवित्रता और सुन्दरता के लिए हमें अग्नि स्वरूप परमात्मा के सानिध्य को प्राप्त करना है और इसकी प्राप्ति अग्नि के उपासक विद्वान् ही हमें करा सकता है।

Super plants

The botanical world is inspiring new ways to preserve the environment and save lives.

Repelling pests : By mixing ordinary food crops with wild ones found in Earth's remote corners, farmers are finding they can use less insecticide.

Treating illness : More than 28,000 plant species are currently available for medicine – but fewer than 13% of them are regularly cited as being used in studies in regulatory publications. China is one country taking advantage of that other 87% to save lives by incorporating more traditional Chinese medicine in their healthcare system by 2020.

Feeding the world : Ethiopia has an ancient fruit called the enset that's known as the 'banana on steroids' due to its similar appearance. It feeds more people per square metre than most cereals, and is weather-resistant, which is why it's also called 'the tree against hunger'.

Stopping wildfire : Kew Gardens is looking into plant families with thick bark and quick re-sprout rates that could be used as natural fire breaks and reduce the amount of valuable resources that are burned.



(Image: Enset on a plantation in Southwest Ethiopia. Credit: Paul Wilkin)

Source : <http://www.bbc.com/future/gallery/20170905-33-ideas-that-will-change-the-world>

Contributed by Bramdeo Mokoollall

YOUTH MAGAZINE

The Changing Landscape

*Prof. Soodursun Jugessur, D.Sc, G.O.S.K,
Arya Bhooshan*

The world is changing at a rapid pace, so much so that we cannot keep pace with global events. Many people just espouse the changes as a natural sign of development. Naturally globalization has a fair share in this change, but we also have a good chunk of world population grounded to their roots, hoping to preserve their identities at any cost. The landscape is marked with these two major categories and many shades in between.

As followers of the Vedic way of life we stress on eternal values that have persisted for millenniums. These values are founded on a respect for all life, the practice of Dharma with its ten principles, the belief on the Law of Karma, and efforts to preserve a healthy global environment. These, along with the practice of sharing the wealth generated for welfare of all, are highly laudable and need to be promoted at all cost by whatever means possible. Here comes the crucial question! Shouldn't we change our usual ways of doing things, our traditional practices?

We should understand that while the objective and the goal have to be grounded on the eternal values, our approach to them, and the way we carry on with our lives and try to realize that goal has to adapt to circumstances. The Essence stays the same, but the Means change with the flow of time and place. We cannot adopt an old traditional mode of doing things when time has changed. Here comes the need to adapt and bring in innovation in

The Youth Magazine

Volume 13, September 2017

EDITORIAL BOARD :

Mr Dharamveer Gangoo,
M.A.,P.G.C.E, Chief Editor
Mr Sarwanand Nowlotha, B.A,
Associate Editor
Prof. Soodursun Jugessur, D.Sc,
G.O.S.K, Arya Bhooshan
Dr Oudaye Narain Gangoo,
M.A,Ph.D, O.S.K, Arya Ratna
Mr Narainduth Ghoorah, *P.M.S.M,
Arya Bhooshan*

PRODUCTION :

Mr Satterdeo Peerthum, *O.S.K,C.S.K,
Arya Ratna*
Mr Prabhakar Jeewoath, *P.M.S.M.*
Mrs Poonum Sookun – Teeluckd-
harry, *Barrister at Law, LLM*
Dr Deorattan Leechoo

FINANCE :

Mrs Rutnabhooshita Puchooa,
M.A,P.G.C.E
Mrs Aryawatee Boolauky, *MSc, P.G.C.E*
Mrs Sangeeta Samputh, *B.A*
Mr Ravindrasingh Gowd,
Agricultural Chemist

WEBSITE :

Yogi Brahmadev Mookoonlall -
Darshanacharya

Published by :

**The Mauritius Arya Yuvak Sangh
c/o Arya Sabha Mauritius,
Port Louis**

Tel # : 212 2730, 208 7504

Fax # : 210 3778

e-mail :

**aryayouthmagazine@gmail.com
www.aryasabhamauritius.mu**

our approach. An innovation that is in tune with some of the global changes, and that is the result of scientific discoveries and principles. Science and superstition do not go together, nor follow each other.

We are seeing a growth in superstition in spite of so-called development we espouse. Superstition is any practice based on beliefs that are without sound logic and that was practiced by pure tradition. Sound logic itself is based on observations that can be repeated anywhere under controlled environment. Science is advancing thanks to these observations, and millions are being spent to carry out the experimentation. When it comes to superstition, it is based on blind faith, faith in the teachings of some so-called gurus that often claim supernatural powers, those whose survival depends on the exploitation of weak minds. Weak minds are either the result of unsound education or of bad health and poverty. Very often the powers that be, capitalize on such weaknesses and promote superstitious practices. We see it everywhere in the world where poor education, poverty and disease are rampant. People are carried away by hocus pocus shows and by temporary financial gains and health palliatives. Different forms of gurus who hold a sway on the minds of believers flourish until their fraudulent practices are observed and exposed. The recent exposure of one guru in Haryana in India has made headlines.

In our own context we see it so often amidst groups that follow traditions blindly, who hardly ever question them and are bound by social and political allegiances. Prejudices run high and those who profess a faith based on rational arguments are branded as social rebels. Religious festivals are sponsored by public money in order to keep the flock in check. Should not such money be used in improving employment opportunities, the quality of education, in providing better health facilities, better housing and amenities for keeping the youth away from private tuition and from the addiction of the social media?

The changing landscape demands that we adapt to the best from both the east and the west. Rational choice is essential for proper adaptation. Our Gayatri mantra stresses on development of intellect and ability to think rationally. Otherwise we are led by the gloss and glamour of material living, and keep complaining about the loss of morality, decay in values, rise of corruption and terrorism. The social atmosphere is heavy with the weight of such decay.

The ability to live a life based on values of sharing is to be encouraged. Charity begins at home. Otherwise individualism, a hallmark of western lifestyles, will overpower us. Stress on building a happy family where the spirit of belongingness prevails, where parents and children live in harmony, sharing the daily joys and sorrows and in the responsibilities of one another, can alter the course of our life.

In the course of the last fifty years we have seen a gradual decline of values with the rise of individualism, a new creed that runs after material comforts and the indiscriminate exploitation of the environment. Not only are climate

change and global warming threatening our very existence on the planet, but at the same time our family structures are being dismantled very fast. Children prefer to live their own lives and parents, however old, are left to themselves, often spending their last days in homes that are proliferating. The spirit of sacrifice, so dear to our Vedic values, is slowly disappearing. Who will bring about the necessary changes? We don't have to live in the past, harping on the love and harmony that once prevailed. We have to face the problems of social decadence with drugs, crime, violence increasing, and corruption making headlines. We have to use new methods to bring back the eternal values prescribed in our scriptures, and bring about the changes as a priority within our own families. Enough of playing the blame game! We are equally responsible and have to assume our responsibilities.


Our thrust should hence be on the training of the new generation with new media methods available. Just chanting and of mantras will not attract this generation, however much we may claim that the vibrations of the mantras have their own effects. They need to understand them and imbibe them in their daily life. The best place to start is in the home followed by schools. Our parents and educators have to be trained to assume such responsibility.

The changing landscape requires a new set of colors to make a difference. It is never too late to start. Hence an appeal to all concerned stakeholders to assume their responsibilities. We are the masters of our own fate! Enough of saying that whatever happens is for the good. God helps only those who help themselves. We often hear that we are ruled by destiny and God knows what he is doing. While there is some element of truth in this, the laws of Karma require that we act, do our best and leave the rest to His decision.

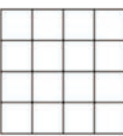
Hence the changing landscape forces us to act in accordance with the eternal laws where change is another natural parameter. Keeping stuck to traditions will not lead us ahead.

All square

On each of these grids, the counters lie at the four corners of a square.



What is the greatest number of counters you can place on this grid without four of them lying at the corners of a square?



Shape puzzle

Each shape stands for a number.

The numbers shown are the totals of the line of four numbers in the row or column.

▲	♣	▲	○	<input type="text"/>
♣	○	♣	▲	25
○	○	○	○	20
▲	♣	♣	▲	<input type="text"/>
<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	26

Find the remaining totals.



MAURITIUS ARYA YUVAK SANGH

LOVE ALL, HATE NONE

Dharamveer Gangoo, M.A, P.G.C.E
President Mauritius Arya Yuvak Sangh

The Vedas advocate that “in a better world the natural law is love, and in a better person, the natural nature is loving.”

Love is not simply a desire, a passion and / or an intense feeling for one person or object, but a consciousness which is simultaneously selfless and self-falling. Love can be for one’s country, for a cherished aim, for truth, for justice, for ethics, for people, for nature, for service and for God. Love flows from truth, that is, wisdom.

The basis of real love between people is spiritual. To see another as a spiritual being, a soul, has to see the spiritual reality of the other. True love is when the soul has love for the soul. It is eternal; the soul never dies. Such love is righteous, and it brings joy. Attachment to that which is perishable brings sorrow.

When true love prevails, there is no room for any animosity, hatred, anger, or jealousy. Feelings are positive. There is harmony as kindness, care and cordial understanding surpass the slightest controlling tendencies.

Human beings are caught up in a behavioural pattern which has distorted the value of love and the ability to trust one another with good-natured feelings and intentions. One minute there is love; the next minute that love is broken, resulting in intense sorrow and pain. It seems that the human intellect has lost connection with the one eternal source of love and has taken support from temporary sources. Human beings are reminded time and again that they should love all and hate none. “*Mitrasya Chakshushā Samiksha mahe*” in the Yajur Veda spells out: ‘everything (living and non-living) in the universe is to be viewed with a friendly eye’. Compassion will drive us to help those in need as well as forgive those who act with ill-will.

The Vedas stress on the universal concept such as ‘*Manurbhava Janayaa Daivyam Janam*’ that is MEN FOR MANKIND. The Vedas call on men and women to become human beings through noble thoughts, speech and actions.

The Vedas decrees that every human being need be guided by love, righteousness and justice; he / she should not be content with promoting his own good, rather looks for his own good in promoting the good of all; and he / she should regard himself under the restriction to follow common rules of society calculated to promote the well-being of all, and love for all.

Hence, the entire world can be transformed through loving vision, loving attitude, and loving actions.

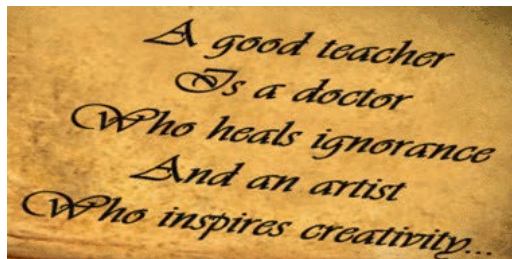
TEACHER'S DAY : A TRIBUTE TO OUR TEACHERS

Sarvanand Nowlotha, B.A., Secretary, Mauritius Arya Yuvak Sangh

« Matrimaan Pitrimaan Achaaryavaan Purusho Veda »

The above quotation emanates from the Shatapatha Braahmana. In fact someone becomes learned only when he / she has had three proper instructors: (i) the mother, (ii) the father and (iii) the teacher.

Besides parents, emphasis is on the teacher. To become well-educated, one has to have a good teacher. On the occasion of the Teacher's Day, let us reflect on the role of the teacher as an important character in the character building process of the student.



First and foremost, teachers leave no stone unturned to disseminate knowledge and dispel ignorance. Knowledge is light while ignorance is darkness. Thus, by illuminating life through education, they act as torch-bearers in the struggle for survival.

The task of providing light through education is not an easy one.

It is a wrong perception that teaching is the easiest and the coolest profession. Cynics propound that life of a teacher is a bed of roses with a lot of holidays and good rest as they do not do any heavy duty. They do not have to face the scorching heat of the sun nor endure the pain of wasps biting as workers in fields and plantations do. But, then have these cynics taken stock of the exigencies of the teaching profession? When others are relaxing, sleeping or resting, the teacher is busy preparing and planning notes for the student. Moreover, the teacher has to be up to-date in his/her scheme of work and notes (daily, weekly, monthly) for his/her employer. Sometimes, the workload is so hectic that midnight oil is burnt to complete the task. On top of that, an educator has to undergo a rigorous training spanning in years at the MIE. After the training, learning still goes on at the workplace. In fact, learning never ends. Novelty continues to creep in and one has to keep pace and be ever updated; teaching methods, learning styles, new concepts, changing syllabus, components in the IT World and so on. Therefore, the educator is in a permanent learning-mode. It is by going through these phases that the educator is able to bring 'light' in the life of the student.

Never underestimate a teacher. If you stay in a good relationship with your teacher, you will make your life. Otherwise you may break it.

Saturday 16.09.2017 @ Pailles Arya Samaj :
6th Anniversary of International Vegetarian Association (Mauritius)

Vegetarianism (I)

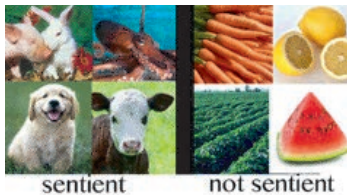
By Yashvind Poteeram

Vegetarians do not eat meat, seafood, poultry, the flesh of any other living beings, and the by-products of animal slaughter, such as animal-derived rennet and gelatine. People choose to be vegetarians for different reasons: spiritual values, faith / religious beliefs, and for health-related, political, environmental, cultural, aesthetic or economic motives



1.0 Vegetarianism & the Vedic way of life

The Vedas and allied Vedic texts strongly condemn the eating of meat and uphold vegetarianism as an ideal, respecting the right to life of other sentient beings.



“You must not use your God-given body for killing God’s creatures, whether they are humans or animals.” (Yajur Veda 12.32)

“One who partakes of human flesh, the flesh of animals and deprives others of milk by slaughtering cows, if such a fiend does not desist by other means, then you should not hesitate to cut off his

head.” (Rig-Veda 10.87.16)

Even the Mahabharata (Anu.115.47) has forewarn the activity of eating flesh: *“He who desires to augment his own flesh by eating the flesh of other creatures, lives in misery in whatever species he may take his (next) birth.”*

The ancient seers and sages had already acknowledged that all living species are equally important as they serve to maintain the ecological balance. The Vedas are monotheistic, affirming the one-and-only God, known by various names. Conversely, non-Vedic texts describe incarnations of God in various animal forms, for example, the fish (*Matsya*), the tortoise (*kurma*), the boar (*Varaha*) and even a half man/half lion (*Narsimha*). If we are to believe, even for a few moments, in incarnation, then slaughtering and eating animals would equal to killing the avatars for a short-lived pleasure, taste!!! And in the same vein ...think of the consequences of killing incarnations of God ...beyond our imagination ...what befell on Raavana and Kansa who fought Raama and Krishna!!!

The physical body is a temporary residence for the eternal soul. Each soul transmigrates, from body to body, from species to species following its karma. In the human form, the soul is empowered with reason and the ability to

know / realise the Absolute Truth and take a break from the cycle of repeated births and deaths, that is - attain Moksha.

Ayurveda, the science of wellbeing speaks of “*pancha-gavya*” as the five products of the cow - milk, curd, ghee, urine and dung as therapeutic and purifying products. The cow is respected in her own right as one of the several mothers because she offers her milk as does one's natural mother. Vedic ideals uphold the cow with an important role in the economy. For example, cow dung serves as an organic and inexpensive fertilizer. Stored in underground tanks, it also generates methane gas that is used for heating and cooking. Cow dung and cow urine are powerful disinfectants, used both as a poultice and a cleansing agent. “*Aghanyaa*” in the first hymn of the Yajur Veda refers to cows and are not to be killed.

Sage Manu, the Universal law-giver Manusmriti, decries animal slaughter and meat-eating: “*He who injures harmless creatures from a wish to give himself pleasures, never finds happiness in this life or the next.*” (5.45)

“*Meat can never be obtained without injury to living creatures, and injury to sentient beings is detrimental to the attainment of heavenly bliss; let him therefore shun the use of meat.*” (5.48-49)

“*He who does not eat meat, or who does not kill living creatures, or who does not cause them to be killed, is a friend of all creatures. Such a man is incapable of being oppressed by any creature. He enjoys the confidence of all living beings. He always enjoys the praise of the pious.*” (115.9-12)

“*He who wishes to multiply his own flesh by eating of other creatures meets with disaster.*” (Narada)

“*Those who are ignorant of real dharma and, though wicked and haughty, account themselves virtuous, kill animals without any feeling of remorse or fear of punishment. Further, in their next lives, such sinful persons will be eaten by other creatures.*” (Bhagavad Purana 11.5.14)

...to be continued

My first meditation camp experience



Sumputh Shruti

A level Student at Queen Elizabeth College

The Arya Sabha Mauritius (Arya Samaj Community) organised a two-day meditation camp, commonly known as *shivir* on the 26 and 27 August 2017. The sessions were conducted by His Eminence Acharya Ashish Ji, Darshanacharya from Tapovan Ashram, Dehradun, India. The core of the programme was “applying the Vedic wisdom in our day-to-day life”. The venue was the Arya Bhavan, Souillac which

is opposite the scenic Telfair garden.

Away from the humdrum of school and work, the coastal environment provided an ideal haven, conducive to learning meditation techniques. The hall was equipped with the basics: dormitories, washrooms and kitchen. Nobody deplored the slightest discomfort and both days went by in solemnity, observing the set norms for discipline and decorum.

As instructed on day one, everybody woke up as early as 5 o'clock and attended Miss Mohini's yoga session, a refreshing workout to those rusted limbs. The class was then taken over by Acharya Ashish Ji, an authoritative and conscientious mentor who introduced the first meditation technique, with step-by-step elaboration on the importance of total mindfulness to the path of self-realisation. After the first interval, we attended yajna performed by Pandit Beutullah who instructions cleared common misconceptions.

When the class resumed, Acharya Ashish Ji gave lessons on two more meditation techniques: (i) controlling the flow of thoughts, and (ii) feeling the presence of God as we utter 'om'. I personally found it a bit difficult but it is certainly to be perfected through continuous practice. Acharya Ji also imparted the fundamentals of Vedic knowledge which have undoubtedly added more substance to my education. The class was filled with people of varying age groups - students, young adults, retirees as well as Pandits and Panditas. There was an active exchange through questions and answers. Acharya Ji's coherent answers helped us gain insight into particular subjects, clarifying doubts and ignorance. His explanation on the involvement of karma and on the influence of *tamasic* food on the mind allowed me to take a stance on vegetarianism.

The second day followed the same pattern of events with an extended questions and answers session as we were left with half a day only. The camp terminated with feedback from some participants, including myself. Dr O.N. Gangoo, President of Arya Sabha Mauritius, expressed his appreciation towards the participants as nowadays few people are interested in such activities. Moreover, I support his initiative to organise more seminars in the future to promote spiritual and intellectual development. Youngsters should be encouraged to participate as young people will become leaders of tomorrow. Well-trained, they will do their utmost to propagate the Vedic knowledge around the world.

Faith needs no explanation

| *Vanisha Luchanah, Educator, DAV College,
Port Louis*

Yajna is a means to ensure the wellbeing and prosperity of humankind; in their life and even after death equally. In the Vedic world, Yajna is believed to be the panacea to all human problems: from the small to the smallest. Never-



theless, it also consists of a fundamental and essential aspect - a means to transcend selfishness. It is never performed with the sole motive of benefitting oneself, but with the perception to help others in our surrounding equally. One's belief and faith is not enslaved to any kind of justification or rationalisation.

Prayers are often performed on specific occasions such as festivals, auspicious occasions and important events in the life of a person. In the same vein, each year a Yajna is performed for all the students of our school who will be taking part in the SC and HSC exams; a significant phase of their life. A motivational drive for our students, it is also a medium for the teaching and non-teaching staff to shower their blessings on the students, spread positivity and dispel negativity. It boosts the willingness to move forth with an optimistic outlook. Yajna is not limited to merely asking the divine power to fulfil desires. It is an ideal means to attain the four indispensable goals, namely - Dharma, Artha, Kama and Moksha.

“Faith dispels the overpowering gloom of ignorance like sunlight dispels the clouds. Vanity and ignorance automatically go away with the gem of faith. When faith and will develop, illumination arises from within just as the sun rises and illumines the darkness.” *Swami Satyanand, Rikhiapeeth*



Where in the World ?

H. Routho, Educator, DAV Port Louis

You have been studying Geography since your early years. You have been watching documentaries, reading about countries and may be globetrotting to discover new countries and cultures. So you think that you know a lot about places and countries? These words whose meanings, figuratively speaking, are all over the map are all derived from place names. See if you can match the word to the place its name refers to.

List A

1. Arcadia
2. Assisi
3. Attic
4. Axminster
5. Bayonet
6. Blarney
7. Bougie
8. Calico
9. Castile
10. Chautauqua

List B

- A lake in Western New York State
- A town in Devon, England
- A city of the French Basque area
- A castle near Cork, Ireland
- An Algerian Seaport
- A region of ancient Greece
- A region of central Spain
- A city in India
- A town in the Perugia, a Province of Italy
- A pastoral area of ancient Greece

Answers in the next edition. Please send your answers to :

aryayouthmagazine@gmail.com

There will be a lucky draw in case of multiple winners.

What is success?

Mrs V. Oodun-Rajroop
Educator, DAV College, Port-Louis

A lot of research has been done on the subject of success and failure. The secrets of success can be learnt from the life stories of successful people. They all have certain common qualities no matter which period of history they lived in, and no matter what their fields of endeavour.

Success leaves no clues. If we identify and adopt the qualities of successful people, we too shall be successful. Similarly, there are characteristics common to people who do not succeed. If we identify and avoid those characteristics, then we shall not be failures. Success is no mystery. It is simply the result of consistently applying some basic principles. The reverse is just as true: Failure is simply a result of repeatedly making a few mistakes. This might sound too simplistic but the fact is that most truths are very simple.

To laugh often and love much;

To win the respect of intelligent persons and the affection of children;

To earn the approval of honest critics and endure the betrayal of false friends;

To appreciate beauty;

To find the best in others;

To give of one's self without the slightest thought of return;

To have accomplished a task, whether a healthy child, a rescued soul, a garden patch, or a redeemed social condition;

To have played and laughed with enthusiasm and sung with exaltation;

To know that even one life has breathed easier because you have lived;

This is to have succeeded.

Success and happiness go hand in hand. Success is getting what you want and happiness is wanting what you get.

Existence alone is not success! It is a lot more!

Do more than exist – live

Do more than touch – feel.

Do more than look – observe.

Do more than read – absorb.

Do more than hear – listen.

Do more than listen – understand.

(John H. Rhoades)

SOME OBSTACLES TO SUCCESS

- Ego
- Fear of failure; lack of self-esteem
- No plan, no self-prescribed goals
- Life changes

- Procrastination
- Financial security issues
- Lack of focus, commitment, training, priorities

STRUGGLE

A biology teacher was teaching his students how a caterpillar turns into a butterfly, he told the students that in the next couple of hours, the butterfly would struggle to come out of the cocoon, but no one should help the butterfly. Then he left.

The students were waiting and it happened. The butterfly struggled to get out of the cocoon and against the advice of the teacher, one of the students took pity on it and decided to help the butterfly out of the cocoon. He broke the cocoon to help the butterfly so it didn't have to struggle anymore. But, shortly afterwards, the butterfly died.

When the teacher returned, he was told what had happened. He explained to the student that it is a law of nature that the struggle to come out of the cocoon actually helps develop and strengthen the butterfly's wings. By helping the butterfly, the boy had deprived the butterfly of its struggle and the butterfly died.

Apply this same principle to our lives. Nothing worthwhile in life comes without a struggle

QUALITIES THAT MAKE A PERSON SUCCESSFUL

1. **Desire** : A burning desire is the starting point of all accomplishment. Just like a small fire cannot give much heat, a weak desire cannot produce great results.
2. **Commitment** : The quality of a person's life is in direct proportion to their commitment to excellence, regardless of their chosen field of endeavour. (Vince Lombardi)
3. **Responsibility** : People with character accept responsibilities. They make decisions and determine their own destiny in life.
4. **Hard work** : The harder a person works, the better he feels; and the better he feels, the harder he works.
5. **Character** : Character is the sum total of a person's values, beliefs and personality. It is reflected in your behaviour and in your actions.
6. **Positive believing** : Positive believing is an attitude of confidence that comes from preparation.
7. **Give more than you get** : If you want to get ahead in life, go the extra mile.
8. **The power of persistence** : Persistence results from commitment and leads to determination. There is pleasure in endurance. Persistence is a decision. It is a commitment to finish what you start.

Bibliography: *You can win* by Shiv Kherra

Family Values | *Mrs Trisha Gopaul, Educator, DAV College, Port Louis*

Today, an important issue which is being raised in our society is Family Values. Why? This is so, because nowadays, sadly, a degradation of family values is prominent. Let us try to understand what is meant by family values.

What are the most essential family values?

Our family values consist of sharing, forgiving, being grateful to someone, having good manners, honesty and the starting point is respect for oneself and to others. It involves all the traditional or cultural values that are passed on from generations to generations and which also pertain to how we want to live our family life.



It is observed that children do not show any respect to their parents. For instance, kids throw tantrums when their wishes are not fulfilled. Is it a good way of behaving with parents? Definitely NOT! There is hardly anything more important to a child than family. Thus, it is of utmost importance to recognize the sacrifices of our parents and it is our responsibility to respect as well as to understand them. Respect is one of

our most beautiful family values which should be inculcated at an early age because to receive respect, one should give it.

Alternatively, it is perceived that parents have become excessively concerned with material possessions. The only things that matter to them are: money and leading a comfortable life with their family. For instance, some years back, young people had to attain their 18th birthday to be gifted a mobile phone and in most cases, it was the well-known 3310. However, today's kids are given their own tablets or iPad at a tender age and college students, the latest mobile phones. Thus, parents overlook the real needs of children which are parental love, affection and quality time. Parents need to dedicate some minutes every evening to the family; talk of their arduous day - what children have done at school or at work will help to strengthen the family ties. Instead of being entangled in the cobweb of social evils, kids will be more secured in the family cocoon.

It is an undeniable fact that our society which includes the family institution is undergoing a process of modernization; from the extended to the nuclear family. Nonetheless, we should not forget that the family values that our grandparents taught us are what this generation needs. Those golden values are unique. Yet we fail to show gratitude to our grandparents in spite of the fact that we became more responsible through their guidance.

The ultimate objective of family values is to empower children to grow into responsible adults, who will be able to lead a respectable life.

Les bienfaits de l'Exercice Physique

L. Rughooputh, Chef du Département d'Éducation Physique et Sportive, D.A.V Port Louis

Améliorer sa santé, les études et le travail par l'activité physique



Le corps humain étant conçu pour une vie d'activité, ses parties, surtout le cœur, deviennent moins performants s'il y a une manque ou absence d'exercice physique.

L'Exercice

Aide à préserver une balance entre l'énergie consommée et l'énergie dépensée,

prévenant ainsi le surpoids et l'obésité.

Régularise la tension artérielle, la fréquence cardiaque.

Diminue les risques de développer le diabète.

Réduit les risques des maladies du cœur surtout chez les garçons.

Contribue à la santé mentale et aide à faire face au stress et la fatigue.

Protège contre l'affaiblissement et la fracture des os.

Améliore la condition physique en générale.

Les personnes qui font des exercices généralement sont en meilleur forme et ont une meilleure espérance de la vie, c'est-à-dire une longue vie.

Les exercices recommandés pour votre cœur.

Les exercices cardio-respiratoires ou aérobics aident énormément à améliorer la santé de votre cœur. Ces exercices sont, entre autres, la marche rapide, le jogging, la natation, la bicyclette et la danse. Il est recommandé de pratiquer l'aérobic tous les jours pendant au moins 30-40 minutes.

Les Conseils pratiques

- Choisissez une activité physique que vous aimez, ainsi vous avez plus de chance de la continuer.
- Commencer votre programme d'exercice par la marche surtout si vous avez du surpoids ou vous êtes obèse. L'obésité est un surplus de poids par rapport à la taille et ceci est un danger pour notre santé.
- Après quelques semaines de marche rapide, passez à des exercices plus rigoureux comme le jogging ou la natation.
- Veuillez consulter un médecin avant de commencer un programme d'exercice si vous avez des problèmes de santé tel que l'obésité, les troubles cardiaque, le diabète, l'asthme.
- Réduisez les éléments riches en sucre et en graisse pour rester en forme.

Une bonne santé veut dire une meilleure concentration dans ses études et de bonnes notes aux examens.

14 September 2017

Yajna @ DAV College Port Louis

Blessings & Inspirations for the end-of-year examinations

The stakeholders of DAV College Port Louis believe in an effective education system where the student really needs inspiration, creativity and critical thinking, and not just information; an ecosystem suitable for a child to evolve in the best possible way.

Every year, September is usually a time when the pressure of the looming School Certificate and Higher School Certificate exams can become overwhelming for the students. The school organised a special prayer (yajna), offering a spiritual surround to the students. It serves as a safety valve to restore physical and mental well-being, to seek divine blessings and to offload any undue stress ahead of these crucial exams.

Early morning of 14.09.2017: The academic and non-academic staff transformed the Arya Sabha hall into a space reverberating with positive energy. The décor and the saamaan for the yajna are steeped in significance which was donated with devotion, thus all added their flavour permeating the religious fervour. All could sense the highly charged spiritual atmosphere, the waves of good vibes when we stepped in for the holy gathering. That atmosphere fired the spirits of the students.

From the dais, Acharya Bramdeo Makoonlall officiated the Yajna, chanted the Vedic hymns (mantras) with brief explanations of the first eight hymns in English and French. The students were initiated to meditate and focus on the prayers, more specifically on the Gayatri mantra, familiar to all during which we pray for the enlightenment of our intellect. The powerful sounds and vibrations of the Vedic mantras help the students to overcome academic stress and improve their powers of concentration, leading to psychological and physiological well-being. The students and staff were sitting around some thirty Havankunds chanting the mantras, feeding the blazing fire with ahutis. The sublime aroma from the oblations of ghee and samagri (carefully selected dried medicinal herbs, spices and other ingredients from nature) invaded the premises left a soothing mind-altering effect on one and all.

Using a power-point presentation, Acharyaji explained to the students some effective study, deep-breathing and relaxation techniques, as well as essential study strategies like the use of mind-maps, flow-charts, diagrams, study groups will surely help to boost academic performance. Parents and teachers, at this juncture, can also help to chalk out a balanced lifestyle, that is - a smart timetable which would include studies and other recreational activities like listening to soft soothing music or going for a brief walk in the open air. This would definitely rejuvenate the students to go back to their studies with renewed energetic vigour.

The students received the blessings of Acharyaji, the members of the School Management Team and the teachers, all in an atmosphere of general cheerfulness and an enhanced sense of well-being. Even the Prasad was enchantingly delicious as the contributions for its preparation were soaked with lots of love and affection.

One student, the most stressed among them all, commented with an exhilarating smile that she was feeling much more relaxed after the Yajna. And looking around her, she added that all her friends were now in a state of joy and inner peace.

Privileged indeed! The students could not be going for exams on a better note. We have fulfilled our duty. We only wish they too fulfil theirs with devotion.

Staff and Management

KENOPANISHAD

*Satterdeo Peerthum, C.S.K.,
Arya Ratna*

Oh man ! Who does not act through Prana, the life breath, the air which we inspire, the material air, oxygen but by which Prana acts, that is it gets strength. We must know him indeed as Brahma, the Omnipotent and Omnipresent God. He is not material. He alone must be praised not the air.

The same thing applies to Agni (fire). We pray fire but by whom the sun gets light, energy and heat. We must know him as Brahma, the Omnipresent God. He alone must be praised not the sun which is prakriti.

In order to know Him (perfectly) well we must read the Kenopanishad, because it explains the importance of Brahma by these words – “That Infinite Supreme God (Ishvara / Brahma) who gives strength to the ears, spiritual and mental aptitudes to the mind, power of speech to the tongue, life to the prana (the nostrils) and sight to the eyes. The wise knowing him and realizing Him alone attain salvation (Mukti) after death.” One needs to worship only that Brahma who is the giver of strength to all our limbs.

While framing the ten principles of the Arya Samaj, Swami Dayanand wrote in the third one: “The Vedas are the books of all true knowledge. It is the paramount duty of all Aryas to read them, to teach then to others, to listen to their recitation and to recite it to others.”

The Upanishads explains the difference between two types of people: (i) those who merely praise God by words and do not know him, and (ii) those who after realizing him not merely praise him by words but also act according to his commands, and they lead a virtuous life.

Austerity, endurance and self-conquest, righteous deeds, and the study of the Vedas, all are essential to gain a true understanding of the real God. Further study of Vedangas is extremely helpful to understand the Vedas.

Observations, Reasoning and Understanding

Dhan Ramdharry

Sensations / feelings gives us the emotional form, the basis of our values. The way we perceive and feel about things determine our values. Disconnected to what is around us, we lose our sense of values and distinction.

Pleasure invites us to extend and tune in to our senses. Feelings emerge from the unconscious, the instinctual core of the body; it is the key to buried memories, to events that have a significance which our conscious mind may have ignored.

Emotions arise of the subconscious organizations of impulses which lead us to move away from harm towards pleasure. From the rise and full of our breaths, from the beating of our hearts to the infinite vibrations of atomic particles within our cells, we are a mass of miraculous resonances together as a single core. Resonance is a state of synchronization among vibration patterns. Vibrations, pulsations and streaming are basic to all human relationships and to all concepts of freedom and social concerns. Through relationships we have the opportunity to transform the self-centered ego into awareness of the larger realms in which we are embedded. It is love that opens the way to wider consciousness. We are stopped of our defenses, lifted out of our self-centered habits and propelled into an enlarged view of the world.

“We learn to recognize what is of value in the world only by finding one fit object for such a sentiment.”

The appropriation of our efforts to exist and of our desire to be through the works which bear witness to that effort and desire shows us the way. We are all exposed, unprotected, to involuntary / intuitive cravings. However, we usually select from the various thrills from the external world. That choice is a profound one where there are multiple identifications to the original form and thus the emotional tie.

Philosophy, cognitive science, astrophysics and psychology give different explanations of the intricacies of our intellect with cause and effect, place and time, meaning and consciousness. Yet we are unable to understand the un-perceivable, customs, traditions and religion that are the fundamental ingredients on which the final broth of any race / community is made up of. Then come myths and mythology as the outer structure to give it some consistence.

History, from the days of the caves in the Indus Valley by the time of Manu, the Egyptian civilization, Jewish, Greeks, Asian American, Mediterranean and African, narrates the same cultural development emerging through decades and decades. Each family, neighbour, race or nation has its own defined principles; some are complex while others are simple. However they acknowledge the existence of a supreme ethical soul as the creator, the sustainer and the disposer.

Having recognised Him as being on a higher level of things, men started recognizing their own self. The process to understand that Supreme Being, the self and its relations to the environment and the cosmos is / should be the focus of education.



Advice to the world

People of the world!

Avoid actions which cause suffering to others

Be certain God is, and conduct yourself accordingly

Those who have realised God and teach his certainty - foster them!

Fear to speak untruth

Do not bad mouth others, or carry tales

Avoid meat, and refrain from killing other forms of life

Undertake charity, and austere conduct

Do not be ungrateful of the help received from others

Do not keep bad company

Do not bear false witness

Do not swerve from speaking truth

Keep company of the righteous even with effort

Get away from the unrighteous - immediately

Do not covet other women

Protect lives which face trouble, and pain

Walk the path of righteousness, avoid evil ways

Drinks, intoxicants, theft, lust, untruth, idle talk, cunning and deceit - avoid these.

Remember: the body, youth, physical beauty and wealth - do not last for ever, or long.

One does not know the length of one's life time

It is not possible to avoid the troubles the body is heir to.

It is therefore prudent to arm oneself for the onward journey (righteous conduct) while still living.

So may you live and prosper on this bounteous earth!

Silappadikaram (*Source : Internet*)

Editorial Note :

- ☞ A first comment to the above is surely: “**Antique ideas...by modern norms!**”
- ☞ Modern (western) ideology label Hindu ideas and practices as “old-fashioned”. Hindus, in the name of modernism, rush to decry Dharma as old notions of virtue. The end result: the very idea of virtue or ethics in public life has become hazy to the modern mind.
- ☞ *Leading institutions across the world are teaching ethics, in utter ignorance, that all religions follow a common core - the Sat Sanatan Vedic Dharma (spirituality = spiritual reality in day-to-day life) ...indeed, a wake-up call to see where we have lost our way!!!*

Contributed by Bramdeo Mookoonlall

डी.ए.वी. कॉलेज मोरसेल्मा के चमकते सितारे

श्रीमती आर्यवती बुलोकी, एम.एस.सी., पी.जी.सी.ई., डिप्यूटी रेक्टर,
डी.ए.वी. कॉलेज मोरसेल्मा

आज एक बार फिर 'डी.ए.वी.' कॉलेज मोरसेल्मा गौरवान्वित हुआ। कला एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय हिन्दी नाट्य प्रतियोगिता २०१७' में 'डी.ए.वी. कॉलेज मोरसेल्मा' को 'Best College Team' का पुरस्कार 'नई रोशनी' नाटक के लिए प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार डी.ए.वी. परिवार की आस्था, लगन और प्रेरणा का प्रतिफल है। हम कॉलेज के मैनेजर श्री बेनीराम चुरामन, रेक्टर श्री प्रभाकर गोबिन तथा डिप्यूटी रेक्टर श्रीमती आर्यवती बुलोकी के प्रति विशेष आभार प्रकट करते हैं। प्रतिभागियों के नाम इस प्रकार हैं :-
(१) मनीषा हरनोम - हिन्दी विभाग, (२) रुमीला जानकी - हिन्दी विभाग, (३) संध्या-तोरल सोब्रन - हिन्दी विभाग, (४) कमलेश रमावता - भौतिकी विभाग, (५) सुनील पुनाय - परिचारक विभाग।

सहायक शिक्षक : (१) तिलोकी निशाल, (२) सिबालक जीतेश, (३) केदन अंजुलता, (४) दुकन वेदान्त ।

प्रतिभागी छात्र : (१) प्राकृतिश चतू (२) बिसेसर विराट, (३) रामजीतन आशीता, (४) रामदीन रोलीशा, (५) मांदब सुलक्षिणी, (६) दावराज त्रिषिका, (७) गीना चेतना, (८) भैरव लक्ष्मी, (९) सदासिंह चेतना (१०) गृदोयाल दाश्वानी ।

सहायक छात्र : (१) बादाय होमेश, (२) ईशिता चतरसिंह, (३) पल्लवी सीनोत, (४) गंधिनी लच्छु, (५) स्नेहा चंदू, (६) उमित मुरुचिया



फ़ेसबुक

किरण कुमारी तातारी, एम.ए., पी.जी.सी.ई.



'फ़ेसबुक' चेहरों की किताब है ।
ये सब के पास, सबका खास है ।
आज की नई-आधुनिक आवाज़ है ।
हर युवक की यही तलाश है ।

सबकी तन्हाइयों का साथी
इसके साथ बिताए पलों को ये सजाती
हर घड़ी हमको है ये भाती
तनहाई मैं हमारे मन को ये लुभाती

सम्पर्क रखने का ज़रिया,
ये चाहे कितना बढ़िया ।
पर यह है एक गहरा दरिया,
जो बहा ले जाये, वो नदिया ।

जिसने भी इसको जाना,
किसी ने इसको पहचाना या न पहचाना
किन्तु पड़ा अन्त में सबको मानना,
पड़ता है अक्सर बहुत कुछ गँवाना ।

जो करीब है, उसको दूर करने वाला
बिछड़ों को अपने और पास लाने वाला
सब में इसका बोलबाला
सब का यह प्यारा-दुलारा

प्रौद्योगिकी के फ़ायदे और नुकसान
से रहो न तुम एकदम अनजान ।
बात मेरी जाओ सब मान,
हो जाओ चौकन्ना और सावधान ।